जैन साहित्य स्रोतों का इतिहास निर्माण में योगदान

डॉ० बृजभान यादव
एसोसिएट प्रोफेसर, प्राचीन इतिहास, सतीश चन्द्र कालेज, बलिया

भारतीय वांगमय की अनेक धाराएँ प्राचीनकाल से प्रवाहित रही हैं। इन धाराओं में वैदिक वांगमय और तत्संबंधी वेदांग साहित्य स्मृतियाँ पुराण जैसे ग्रंथ–रत्न बिखरे पड़े हैं, तो दूसरी ओर इस धारा के विपरीत जैन साहित्य बौद्ध साहित्य का अस्तित्व भी विराट भारतीय इतिहास का अंग बना है। भारतीय वांगमय के इतिहास को समझने के लिए जितना महत्व वैदिक साहित्य को प्राप्त है उतना ही सम्मान जैन एवं बौद्ध साहित्य को प्राप्त है।

आलोच्य शोध पत्र में जैन साहित्य का इतिहास और उसके महत्व का परिशीलन इष्ट है। जैन साहित्य की एक सुदीर्घ परम्परा है जिसमें जैन धर्म शास्त्रीय तत्व, पुराण कथाएँ चरित्रकाव्य जैसे विषयों से सम्बद्ध अनेक ग्रंथ प्राप्त होते है यद्यपि जैन धर्म स्वयं को ग्रंथहीन कहलाने में अपना गौरव अनुभव करता था वहीं ग्रंथों के बहुसंख्य भण्डार से स्वतंत्र रूप से अपना महत्व स्थापित करने में सक्षम रहा है। जैन साहित्य के अध्येताओं ने जैन साहित्य की परम्परा को प्रायः छठीं शती ई0पू0 के पहले की स्वीकार की है जो कई विद्वानों को मान्य नहीं हुई है।

प्राचीन भारत के इतिहास निर्माण में जैन ग्रंथों को साधन स्रोत के रूप में प्रामाणिक रूप से इस्तेमाल करने की विस्तृत व्याख्या डॉ0 जगदीशचन्द्र जैन ने अपने महत्वपूर्ण ग्रंथ ''द जैन सोर्सेस ऑफ द हिस्ट्री आफ एंशियन्ट इंडिया'' में की है। जैन ग्रंथों की प्रामाणिकता 100 ई0पू0 से लेकर 900 ई0पू0 तक के काल को यथा तथ्य रूप से निर्दिष्ट की गई है। इनके अनुसार जैन ग्रंथ ऐतिहासिक घटनाओं की प्रमुख सूचनाएं देते है। जैन लेखकों ने विशेषतः धार्मिक और धर्म निरपेक्ष साहित्य रचा।

इनका प्रारम्भिक साहित्य प्राकृत संस्कृत और अपभ्रंश भाशा में मिलता है तथा मध्यकालीन राजस्थानी, गुजराती, तमिल, कन्नड़ और प्राचीन हिन्दी में मिलता है।

जैन साहित्य के द्वारा हमें अनेक प्राचीन घटित घटनाओं का विवरण मिलता है। जैनों का अधिकतर साहित्य आध्यात्मिक है और इसे कई भागों में बांटा गया है।

1. महावीर से पूर्व का साहित्य।
2. महावीर कालीन साहित्य।
3. आगम साहित्य।
4. आगमों का टीका साहित्य।

जैन परम्परा के अनुसार महावीर पूर्व का साहित्य द्रव्यश्रुत और भावश्रुत दो रूपों में मिलता है। जैन श्रुत ग्रंथों में कुछ ऐसी रचना मानी गयी है जो महावीर से पूर्व श्रमण परम्परा में प्रचति थी। द्वादशांग आगम का 12 वॉ अंग दृष्टिवत जिसके अन्तर्गत महावीर से पूर्व की विचारधाराओं मतमतान्तरों और ज्ञान विज्ञान का संकलन महावीर के शिष्य गौतम द्वारा किया गया था। किन्तु दुर्भाग्यवश यह साहित्य सुरक्षित नहीं रह सका। कालांतर में सम्भवतः जैन श्रावकों ने द्वादशांग के रूप में इन्हें संकलित किया और इन्हें शडखड़ागम की संज्ञा दी।

आगम साहित्य :

आगम साहित्य इनमें महत्वपूर्ण है। इसमें 12 अंग, 12 उपांग, 10 प्रकीर्ण, 6 छेद सूत्र, और 4 मूल सूत्र परिगणित है। आगम ग्रंथों की रचना ई0पू0 4थी शताब्दी से लेकर 6ठीं शताब्दी तक के दीर्घकाल के भिन्न धार्मिक संगीतियों और विद्वानों के दीर्घ प्रभास का परिणाम है।

जैन अनुश्रुति के अनुसार महावीर की शिक्षा 14 पर्वों में संकलित है। महावीर स्वामी की मृत्यु के पश्चात देश में दुर्भिक्ष अकाल पड़ा जिससे जैन भिक्षु काल कवलीत हो गये। धार्मिक ग्रंथों को पुनः संगठित करने के लिए जैन भिक्षुओं ने एक सम्मेलन का आयोजन किया ये जैन संगीतियाँ नागार्जुन सूरि की

अध्यक्षता में वल्लभी में और मथुरा में आचार्य स्कन्दिल की अध्यक्षता में आयोजित की गई। किन्तु इन ग्रंथ भागों के भी विलुप्त हो जाने पर 526 ई0 में वल्लभी में एक और संगीति देवर्धिगणि क्षमाश्रमण द्वारा आयोजित की गई जिसके परिणामस्वरूप जैन धर्मग्रंथों को लिखित रूप प्रदान किया गया।

जैन आगम में प्रमुख 12 अंगों का वर्णन हैः–

1. आचारांग सुप्त : इसमें मुनि–आचार का वर्णन किया गया है। इसके दो श्रुतस्कंध है। द्वितीय श्रुतस्कंध में श्रमण के लिए भिक्षा मांगने, आहारपान शुद्धि आदि का वर्णन है।
2. सूत्रकृतांग (सूयगढ़ृ) : इसमें जैन दर्शन के अतिरिक्त अन्य मतों व वादों का प्ररूपण किया गया है।
3. स्थानांग (ठाणांग) : यह श्रुतांग दस अध्ययनों में विभाजित है। इसमें जीव क्रिया अजीव क्रिया एवं मिथ्या तत्व एवं धर्म के प्रकारों का वर्णन है।
4. समवायांग सूत्र : इसमें 275 सूत्र है। और सृश्टि एवं ब्रह्माण्ड के विशय में चर्चा की गई है।
5. भगवती व्याख्या प्रज्ञप्ति : इसमें महावीर स्वामी के जीवन कार्य कलापों को वर्णित किया गया है। इस ग्रंथ में 18 गणराज्यों एवं अजातशत्रु की चर्चा की गई है।
6. नायाघम्मकहासुत्त : इसमें महावीर उपदिश्ट धर्म कथा संकलित है।
7. उपासकाध्ययन : इसमें जैन ग्रंथों के कथानकों एवं अणुव्रतों को समझाया है।
8. अन्तगढ़दशाओं : इसमें महापुरूशों की घोर तपस्या एवं गणधरों का उत्सर्ग बताया है।
9. अणुत्तरौवायीय दसाओ : इसमें महापुरूशों का चरित्र और उनका मनुश्य योनि में आना और मोक्ष पाना वर्णित है।
10. पण्हवागरण : इसमें अहिंसाव्रतों की चर्चा एवं नाना विधाओं एवं मंत्रों का वर्णन है।
11. विपरक सूत्र : इसमें जैन कर्म सिद्धान्त धर्म एवं अंधविश्वासों का वर्णन है।
12. दिठ्ठिवाद : इसमें लिपि विज्ञान एवं गणित के विशय में जानकारी मिलती है।

प्रत्येक अंग का उपांग है।

1. औपपातिक
2. राय–पसेणियं
3. जीवाजीवाभिगम
4. प्रज्ञापना
5. सूर्यप्रज्ञप्ति – (चन्द्र व नक्षत्रों की गतियों का वर्णन)
6. जन्बूदीप प्रज्ञप्ति– (पर्वतों, नदियों एवं काल विभागों का वर्णन)
7. चन्द्र प्रज्ञप्ति।
8. कल्पिका– इसमें कुणिक अजातशत्रु के अपने पिता श्रेणिक बिंबसार को बंदीगृह में डालने श्रेणिक की आत्महत्या तथा कुणिक का वैशाली नरेश चेटक के साथ युद्ध का वर्णन है। जिससे मगध के प्राचीन इतिहास पर प्रकाश पड़ता है।
9. कल्पावतंसिका।
10. पुश्पिका और पुश्पचुला

छेदसूत्र – ये संख्या में छः हैं।

1. निशीथ, 2. महानिशीथ, 3. व्यवहार,
4. आचारदशा, 5. कल्पसूत्र, 6. पंचकल्प।

मूलसूत्र–

ये चार हैं– उत्तराध्ययन, आवश्यक, दशवैकालिक और पिंडनिर्युक्ति।

उपर्युक्त जैन ग्रंथों पर अनेक व्याख्या ग्रंथ लिखे गये।

1. निर्युक्ति – (भद्रबाहु कृति)

   ये संख्या में 10 है। ये प्राकृत पद्यों में लिखी गई है।

2. भाश्य–

   ये भी प्राकृत भाशा में रचित संक्षिप्त प्रकरण है। ये संख्या में 11 है।

3. चूर्णियॉ– (जिनदासंगिति महत्तर)

ये गद्य में लिखी गई है। इनकी भाशा प्राकृत और संस्कृत मिश्रित है।

4. टीका– ये संस्कृत में लिखी गयी है। किन्तु कथाओं में प्राकृत का आश्रय लिया गया है। आवश्यक, दशवैकालिक पर हरिभद्रसूरी द्वारा और आचारांग और सूत्रकृतांग पर शीलांक आचार्य ने टीकाएँ लिखी। इनके द्वारा हमें प्राचीन भारतीय संस्कृति का ज्ञान होता है।

ऐतिहासिक चरित्र ग्रंथ–

जैनों के कई ऐतिहासिक चरित्र ग्रंथ लिखे गये हैं। जिनसे हमें प्राचीन जैन व्यक्तियों का परिचय मिलता है। ये चरित्र ग्रंथ पार्श्वनाथ, महावीर, गौतम स्वामी, जम्बू स्वामी, भद्रबाहु, श्रौणिक, अभय कुमार, धन्यकुमार, कुन्दकुन्द (समयसार, नियमसार आदि) आदि हैं। इन ग्रंथों के अतिरिक्त जैनियों के अनेक प्रबंध और प्रशस्ति ग्रंथ लिखे गये। इनके द्वारा भी अनेक ऐतिहासिक जानकारियाँ प्राप्त होती है। इनमें महत्वपूर्ण है। मेरूतुंग का प्रबंध चिंतामणि, समरादित्य कथा, हरिशेण का कथाकोश आदि।

इनके अतिरिक्त अनेक पुराणों की सर्जना भी हुई जैसे आदि पुराण, उत्तर पुराण, हरिवंश पुराण आदि। इन पुराणों से हमें मन्दिर निर्माण, स्थापत्य आदि की जानकारी मिलती है।

राजनीतिक इतिहास–

जैन साहित्य द्वारा अति प्राचीन से लेकर आज तक के राजनीतिक इतिहास की जानकारी हमें जैन पुराणों से ज्ञात होती है। भागवत पुराण के पॉचवें स्कन्ध में ऋषभ देव के वंश जीवन व तपश्चरण का वृतांत वर्णित है। इस पुराण के अनुसार प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव राजा नाभि के पुत्र थे। वे अनेक सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक मूल्यों के प्रवर्तक थे। उनके दो पुत्र थे। बड़ा बाहुबली तथा छोटा भरत जो एक चक्रवर्ती सम्राट हुआ। इस देश का नाम भारत इन्हीं के नाम पर पड़ा। जैन पुराणों एवं सूत्रग्रंथों में 24 तीर्थंकरों का उल्लेख आता है। इसी प्रकार विभिन्न गणधरों केवलियों श्रुतकेवलियों का भी उल्लेख मिलता है।

जैन साहित्य स्रोतों के आधार पर चार तीर्थंकरों की ऐतिहासिकता सिद्ध होती है ये हैं– ऋशभदेव (आदिनाथ), नेमिनाथ, पार्श्वनाथ एवं महावीर। अन्य तीर्थंकरों के विवरण अतिश्योक्तिपूर्ण प्रतीत होते हैं। जो उनकी ऐतिहासिकता प्रमाणित नहीं करते हैं। महावीर स्वामी के बाद गौतम सिद्धार्थ, जम्बूस्वामी आदि जैन गणधरों का भी उल्लेख इन ग्रंथों में आया है। जैन ग्रंथ शडम–चरित्र में दशरथ पुत्र राम को नायक माना गया है। इन ग्रंथों में ये जैन धर्म के अनुयायी माने जाते थे। जैन ग्रंथ भगवतीसूत्र और आचारांग सूत्र में ई0पू0 6ठीं शती में विद्यमान उत्तर भारत के अंग, बंग, कलिंग, मालव, कच्छ, लाट आदि जनपदों का उल्लेख किया गया है।

जैन साहित्य से हमें ज्ञात होता है कि मगध व लिच्छवि राजकुमारी चेलना का विवाह मगध नरेश बिम्बसार से हुआ था। चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा जैन धर्म स्वीकार कर सम्राट पद छोड़ दिया तथा जैन साधु हो गये। संप्रति एवं कुणाल का इतिहास जैन धर्म के ग्रंथों से मिलता है। जैन साहित्य से ज्ञात होता है कि अशोक की मृत्यु के पश्चात जैन साहित्य दो भागों में बॅट गया था।

शासन व्यवस्था–

जैनागम साहित्य (गुप्तकाल का ग्रंथ) जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति में शासन व्यवस्था संबंधी विधि विधानों का उल्लेख मिलता है। इन ग्रंथों में सात प्रकार की दण्डनीति बताई गई है। जैनागम साहित्य निशीथचूर्णी में दो प्रकार के सापेक्ष एवं निरपेक्ष राजा का उल्लेख किया गया है।

न्याय व्यवस्था–

जैनागम साहित्य में न्याय व्यवस्था के लिए एक न्यायाधीश का होना आवश्यक बताया है। उत्तराध्ययन सूत्र में न्यायाधीश के लिए कारणिक अथवा रूपयक्ष का प्रयोग किया गया है।

राजकर व्यवस्था–

व्यवहार भाष्य में साधारणतया पैदावार के 10 वें हिस्से को कानूनी रूप में मान्य कर स्वीकार किया गया है। जैन सूत्रों में 18 प्रकार के करों का उल्लेख मिलता है जैसे– गोकर, महिशकर, उक्ट्रकर,

छगलीकर, तृणकर, काश्ठकर आदि।

विक्रम संवत–

प्रथम 200 वर्षों तक भारत में इस संवत का कोई अभिलेख प्राप्त नहीं है। 200–400 ई0 के मध्य यह संवत अभिलेखीय कृत संवत के नाम से जाना जाता था। 400–500 ई0 तक यह संवत मालव संवत कहलाया। 8 वीं शती के बाद ही इसका नाम विक्रम संवत पड़ा।

नवरत्न सन्दर्भ–

नरवरत्न की तिथि के एक जैन ग्रंथ ''ज्योतिर्विधाभरण'' में विक्रमादित्य के नवरत्नों की चर्चा है। यह ग्रंथ 11 वीं तथा 13 वीं शती के मध्य बना है। इन ग्रंथ के अनुसार धन्वन्तरी, क्षपणक, अमरसिंह, शंकु, वेतालभद्र, कालिदास, वराहमिहिर, वररूचि का उल्लेख है। क्षपणक वररूचि वेतालभद्र, धनवन्तरी आदि की पहचान असम्भव सी है। कालिदास का समय प्रथम शती से लेकर चौथी शती के उत्तरार्द्ध में आती है। अमर सिंह का अमरकोश 4 थी शताब्दी ई0 में लिखा गया है। बराहमिहिर की तिथि 5 वीं शती के उत्तरार्द्ध में आती है।

इसी प्रकार चार शती के विद्वानों को किसी एक राजा के दरबार में बता देना कहां तक उचित है।

मौर्य साम्राज्य के बारे में–

चन्द्रगुप्त गुरू भद्रबाहु के साथ दक्षिण भारत चले गए और वहीं श्रवणबेलगोला में उसने अपने प्राण त्यागे। जैन साहित्य से ज्ञात होता है कि अशोक की मृत्यु के पश्चात मौर्य साम्राज्य दो भागों में बंट गया था।

जैन साहित्य में विक्रमादित्य के चरित्र की भी चर्चा की गई है। लगभग 55 ग्रंथ विक्रमादित्य के चरित्र पर प्रकाश डालते हैं। इन ग्रंथों में कालकाचार्य का कथानक सर्वाधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें ऐतिहासिकता का सम्पुट है उज्जैन का राजा विक्रमादित्य अनुश्रुतियों का नायक है। कालकाचार्य कथानक के अनुसार उज्जैन में एक राजा गर्धभिल्ल ने कालका की बहन सुन्दरी साध्वी का अपहरण कर लिया था। शकों ने आक्रमण कर गर्धभिल्ल को मार गिराया तथा उज्जैन को अपने अधीन कर लिया। किन्तु शीघ्र ही राजकुमार विक्रमादित्य के नेतृत्व में उज्जैयिनी के लोगों ने उज्जैन पर पुनः अधिकार कर लिया तथा ऐसी मान्यता है कि विक्रम संवत चलाया।

पूर्व मध्यकालीन राजवंशों के बारे में–

जैन ग्रंथों द्वारा हमें पूर्व मध्यकालीन राजवंशों के बारे में भी जानकारी मिलती है। जिनसेन का कथाकोश नायक कुमार चरित्र आदि ग्रंथ राश्ट्रकुल और चालुक्य इतिहास पर प्रकाश डालते हैं। मेरूतुंग की प्रबंधचिंतामणि और जिनसेन कृत हरिवंश पुराण गुजरात और मालवा के राश्ट्रकूटों एवं परमारों के बारे में जानकारी देते हैं।

भौगोलिक इतिहास–

भगवती सूत्र एवं आचारांग सूत्र में बौद्ध महाजनपदों का उल्लेख करते हुए उनकी भौगोलिक स्थितियों का वर्णन दिया है। एवं व्यापारिक मार्गों का विवरण देते हुए साथ ही धर्म प्रचारकों के द्वारा अपनाये गये मार्गों तथा प्रकृति वातावरण आदि का विवरण प्राप्त होता है।

जैन कला–

प्राचीन जैनागम साहित्य में बालकों को उनके शिक्षण काल में शिल्पों और कलाओं की शिक्षाओं पर जोर दिया गया। जैन साहित्य समवायांग सूत्रधार में 72 कलाओं का उल्लेख मिलता है। जैसे– लेख, गणित, रूप, नृत्य, गीत, वाद्य, समताल आदि। भगवती सूत्र में ब्राह्मी लिपि का उल्लेख मिलता है।

वास्तुकला–

आवश्यक चूर्णी में विवरण मिलता है कि कि प्रासाद ऊँचे होते थे, उनकी ऊँचाई चौड़ाई की अपेक्षा कम होती थी। भवन ईंट के बने होते थे। प्राचीन सूत्रों में आठ तल वाले प्रासाद का उल्लेख मिलता है।

जैनागमों में अनेक नगरों जैसे चम्पा, राजगृह, श्रावस्ती, कौशाम्बी, मिथिला का उल्लेख मिलता है। जैन सूत्रों में नगर के वर्णन तथा स्वतंत्र रूप से चैत्यों का उल्लेख आता है। औपपातिक सूत्र से चम्पा नगरी के बाहर उत्तर पूर्व दिशा में पूर्णभद्र नामक

चैत्य का वर्णन दिया है।

आवश्यक चूर्णी में यह विवरण मिलता है कि अति प्राचीन काल में मुनि सुव्रत की स्मृति में एक स्तूप वैशाली में बनवाया गया था। जैन गुफाओं एवं मन्दिरों के विवरण भी जैन साहित्यों में मिलते हैं। जैन शिल्पशास्त्रों में मूर्तिप्रकल्पन यानि मूर्ति निर्माण एवं उनकी प्राण प्रतिश्ठा के विशय में सूचनाएं मिलती है।

जैन कल्प सूत्रों में चित्रकला की जानकारी मिलती है। उनकी शैली उनके वर्ण विशय एवं हस्तलिखित ग्रंथों में सचित्र वर्णन करता है जो जैन भंडारों में आज भी सुरक्षित है।

जैन साहित्य स्रोतों के विवरण द्वारा हमें प्राचीन भारत की राजनीतिक आर्थिक सांस्कृतिक एवं सामाजिक स्थिति का ज्ञान होता है जो प्राचीन भारत के इतिहास को जानने में सहायक सिद्ध हुए।

संदर्भ ग्रंथ–

1. डॉ0 जे0सी0 जैन – द सोर्सेज आफ द हिस्ट्री आफ एन्सिएंट इण्डिया।
2. श्री नाथूलाल प्रेमी– जैन साहित्य और इतिहास।
3. डॉ0 हीरालाल जैन– भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान।
4. डॉ0 जे0सी0 जैन – आउटलाइन आफ जैनिज्म।